एक सबक़ इस्लाम से

सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद क़ल्बे आबिद साहिब क़िब्ला ताबा सराह

पिछले शुमारे से आगे

ईश्वरत्व और ईश्वरीय दूतवाद

'ईश्वरत्व' का अर्थ यह है कि ईश्वर ने प्रत्येक अस्तित्व में मंज़िले कमाल (संपूर्णता) तक पहुँचने की क्षमता दी है और प्रत्येक वस्तु अपनी संपूर्णता (कमाल) की इच्छुक है। सूर–ए–'आला' में अल्लाह ने फरमाया है, ''ईश्वर ही वह है जिसने प्रत्येक वस्तु को बिलकुल ठीक–ठाक बनाया। हर चीज़ की पराकाष्ठा को नियत किया और स्वभाविक रूप से उसकी ओर निर्देश दिया।''

सूर–ए–'ताहा' की 52वीं आयत है, (जनाब मूसा) ''मेरा ईश्वर वह है जिसने प्रत्येक चीज़ को (उसके औचित्य के अनुरूप) सृष्टि प्रदान की, फिर उसके स्वभाव का निर्देशन भी कर दिया।''

हर चीज़ में पूर्णता की क्षमता प्रदान करना और उसकी सिद्धि के लिये स्वाभाविक रुजहान बेकार था अगर वह साधन और वातावरण उपलब्ध न होता जिसके बिना पूर्णता के स्तर तक पहुँचना सम्भव ही नहीं होता। जैसे गुठली में क्षमता है कि वह पेड़ बनकर फले–फूले मगर कब! जब ज़मीन उपयुक्त हो, जड़ों तक पानी की तरी पहुँचे, सूर्य की किरणें सन्तुलित रूप से गर्मी पहुँचायें। वातावरण में हाइड्रोजन हो जो जीवन सामग्री दे। और ईश्वर ने इन सब चीज़ों की व्यवस्था कर दी।

अल्लाह, ब्रह्माण्ड का ईश्वर है तो क्या मनुष्यों का ईश्वर नहीं है! अगर इन्सानों का भी ईश्वर है और निश्चय ही है, तो क्या वह उसमें छिपी हुई असीमित क्षमताओं की पूर्ति और उसके अन्दर अथाह शक्तियों की जागृति की व्यवस्था नहीं करेगा! मनुष्य के पाँव टिकाने के लिये ज़मीन का फ़र्श है। प्यास बुझाने के लिये पानी है। आहार के लिये फलों से लदे पेड़ हैं, लहलहाते खेत हैं। शिकार की रुचि की पूर्ति के लिये पशु हैं, पक्षी हैं। साँस लेने के लिये हवा है। मतलब यह है कि शरीर की पूर्णता के लिये जिन चीज़ों की आवश्यकता थी वह सब ईश्वर ने उपलब्ध करा दीं। परन्तु इन्सान मात्र काया का नाम नहीं। इस काया में छिपी हुई आत्मा भी है। इसकी भी कुछ माँगें हैं, कामनाएँ है। आत्मा का तक़ाज़ा है 'शील' और आचार की 'बुलन्दी' आत्मा का आहार है, 'ज्ञान'। उसकी पूर्ति का माधयम है, त्याग और बलिदान। शरीर ख़ूराक पाकर विकसित होता है और आत्मा दूसरों को खिला के प्रफुल्लित होती है। सौन्दर्य की ओर रुजहान, पराकाष्ठा की ओर झुकाव, यह सब आत्मा के तक़ाज़े हैं। और ईश्वर ने शरीर के विकास और पूर्णता का प्रबन्ध किया तो आवश्यकता थी कि आत्मा की क्षमताओं और

नफ़्स को पूर्णता की सीमा तक पहुँचाने की व्यवस्था करे। और इस उद्देश्य से ईश्वर ने पैग़म्बर भेजे, ग्रंथ अवतरित किये और शरीअतें (धर्म विधियाँ) भेजीं।

कुछ लोगों का विचार है कि एक समय वह था जब इंसान का ज्ञान बहुत सीमित था। अपने अच्छे–बुरे को पहचानने की सलाहियत (क्षमता) न रखता था। नीक–विकार बूझने का विवेक न था। भ्रान्तियों के संसार में रहता था। मतलब यह है कि जब मानव जाति शिशु अवस्था में थी तब धर्म ने मानव को बनाने और संवारने और मानव जाति को आगे बढ़ाने में बड़ी अच्छी भूमिका निभाई थी। लेकिन हर बात का एक वक़्त होता है। वह चीज़ जो किसी युग और परिस्थिति विशेष में लाभकारी होती है, परिस्थितियाँ बदलने के बाद हानिकारक भी हो सकती हैं। अब दौर बहुत कुछ बदल चुका है, समय आगे बढ़ चुका है। इंसानी जानकारी का क्षेत्र विशाल हो चुका है। अब वह पृथ्वी को ब्रह्माण्ड का केन्द्र नहीं, ब्राह्माण्ड की एक साधरण आकाश गंगा के, एक छोटे से सूर्य के गिर्द चक्कर लगाने वाला, बहुत ही छोटा नक्षत्र समझता है।

इंसान की यात्रा सीमा ऊँटों और घोड़ों से अधिकाधिक कुछ सौ किलोमीटर थी। अब वह अन्तरिक्षों का यात्री है। अब वह शायद चाँद को देवता न समझे। उसके क़दम चाँद की धरती को रौंद चुके हैं। अतः इस विकसित युग में धर्म पूर्णता की ओर ले जाने के बजाये इन्सान को प्रतिक्रियावादी बनाता है। उसकी प्रगति में रुकावट ही नहीं पिछले पाँव बीते युग की ओर पलटाने का कारण बनता है।

ऊपरी तौर पर तो देखने में यह बात मन को छूती है, परन्तु पूरा ध्यान दिया जाये तो प्रत्येक न्याय प्रिय स्वभाव रखने वाला यही फैसला करेगा कि जैसे हज़ारों वर्ष पहले धर्म आवश्यकता थी उसी तरह आज भी पैग़म्बरों की रहनुमाई आवश्यक है। यदि पैग़म्बर डाक्टर बनाने, वैज्ञानिक ढालने, इंजीनियर रचने के लिये भेजे गये होते तो उनकी शिक्षाओं की आवश्यकता न रहती। लेकिन वह सुशीलता सिखाने, आचार बनाने, नफ़्स की प्रगति और आत्मा की पूर्णता के लिये आते रहे हैं।

आज जबकि नये–नये आविष्कारों, भौतिकता की प्रगति और कृत्रिम प्रकाश ने आदमी की आँखों में ऐसी चका–चौंध पैदा कर दी है कि अब वह आत्मा की तलब और मन के तक़ाज़ों से बिलकुल असावधान हो गया है। नैतिकता के ह्रास में दिन प्रतिदिन बढ़ोत्तरी होती जा रही है। घातक से घातक हथियारों का आविष्कार, दूसरों पर श्रेष्ठता और वरीयता का भाव, सकल संसार के धन–दौलत पर अधिकार जमाने की लालसा, पर राष्टों को गुलाम बनाने, राज्यों पर अधिकार जमाने की स्पर्धा ने उसको अन्धा बना दिया है।

(जारी)